मास्टर अजीज के कीर्तन

[पहिल खण्ड]

संपादक
एम. जब्बार आलम
नागेन्द्र प्रसाद सिंह

पाण्डेय कपिल ग्रंथ-संग्रह
मार्ग-3, इन्द्रपुरी, पटना-800024

www.bhojpurisahityangan.com

समन्वयवादी लोक चेतना के भक्तकवि

मास्टर अजीज के कीर्त्तन

पहिल खण्ड

[भोजपुरी कीर्त्तन संग्रह]

संपादक

एम. जब्बार आलम :: नागेन्द्र प्रसाद सिंह

प्रकाशक

विश्व भोजपुरी सम्मेलन

डी-31, साउथ एक्सटेंशन पार्ट-2,

नई दिल्ली-14

www.bhojpurisahityangan.com

यह पुस्तक में सकलित सामग्री के व्यावसायिक उपयोग, कैसेटिंग या अन्य इलैक्ट्रिटकल या संचार माध्यम में उपयोग करे का पहिले संपादक से लिखित अनुमति लिहल आवयश्क बा। बिना अनुमति के व्यावयायिक उपयोग करेवाला के खिलाफ कानूनी कार्रवाई कइल जा सकेला।

मास्टर अजीज के कीर्त्तन

कवि	:	*मास्टर अजीज*
संपादक	:	*एम. जब्बार आलम :: नागेन्द्र प्रसाद सिंह*
प्रकाशक	:	विश्व भोजपुरी सम्मेलन डी-31, साउथ एक्सटेंशन, पार्ट-2 नई दिल्ली-14
संस्करण	:	पहिल : सन् 2003 ई.
सर्वाधिकार	:	विश्व भोजपुरी सम्मेलन
मूल्य	:	रु 50/- (पचास)
मुद्रक	:	*आलेखन* न्यू डाक बंगला रोड, पटना-1 दूरभाष : 2235753

Master Ajij Ke Kirttan

Edited by
M. Jabbar Alam & Nagendra Prasad Sinha
Price . Rs. 50/- (Fifty)

www.bhojpurisahityangan.com

संपादकीय

समन्वयवादी संस्कृति आ लोकचेतना के भोजपुरी भक्त-कवि आ सम्मानित कीर्त्तनकार मास्टर अजीज (सन् 1910-1973 ई.) के लगभग दू हजार कीर्त्तन, गीत आ कविता लोककंठ में लोकप्रिय रहल बा। समय का गति आ भारतीय संस्कृति (विशेषत: लोकसंस्कृति) पर पूंजीवादी पच्छिमी संस्कृति का जोरदार आक्रमण का कारण एह में से अधिकांश विस्मृति का गर्भ में विलीन हो गइल बा। उनका कुछ संघतियन आ शिष्यन का माध्यम से कुछ सामग्री उपलब्ध भइल ह, जबना के संकलन आ संपादन एह 'मास्टर अजीज के कीर्त्तन' में कइल जा रहल बा। ई पुस्तक ओह योजनाबद्ध शोध-ग्रंथ 'मास्टर अजीज : व्यक्तित्व आ कृतित्व' के आधार सामग्री बनल बा, जवन अबही प्रकाशन का क्रम में बा। अभी मास्टर अजीज के आउर कीर्त्तन, गीत आ कविता के खोज जारी बा, जवन एही क्रम में भविष्य में प्रकाशित कइल जाई। अफसोस के बात बा कि मास्टर साहेब जवन व्याख्या, प्रसंग-कथा आ विद्वत्तापूर्ण प्रवचन अपना कीर्त्तन का क्रम में कहत रहलन, ऊ अब ओह रूप में ना मिल सकी।

एह पुस्तक में संकलित सामग्री सर्वश्री रामलोचन पंडित, वैद्यनाथ सिंह, जगदीश शर्मा आ झगरु राय से उपलब्ध हो सकल ह। ई सभ लोग धन्यवाद के पात्र बा। मास्टर अजीज के उर्दू, फारसी, अरबी, संस्कृत, हिन्दी बंगला आ अँग्रेजी के अच्छा ज्ञान रहे। ऊ सनातन धर्म का अलावे इस्लाम, क्रिसचियांटी आदि विभिन्न धर्म-ग्रंथन के अध्ययन-मनन कइले रहलन। एही से उनका में रागो समन्वयवादी दृष्टि के विकास भइल रहे। ऊ अपना समय के एगो अइसन भक्तकवि आ कीर्त्तनकार रहलन, जे धर्म, जाति आदि से निरपेक्ष सर्वमान्य आ लोकप्रिय रहस। एही से उनका अधिकाधिक रचना के विस्मृति का गर्भ से उद्धार कइल एगो सांस्कृतिक दायित्व बन गइल बा। अपील बा कि जेकरा पास मास्टर अजीज के आउर कीर्त्तन, गीत आ कविता उपलब्ध हो, ऊ संपादक लोग के उपलब्ध करावे के कृपा करो।

विश्वास बा कि ई संकलन पाठक, विद्वान आ शोधकर्त्ता लोग के बीच लोकप्रिय होई आ भोजपुरी साहित्य के श्रीवृद्धि में योगदान दी।

– संपादक

www.bhojpurisahityangan.com

क्रम

1.	श्रीराम नाम-कीर्त्तन	(सात)	...	5
2.	श्रीकृष्ण नाम-कीर्त्तन	(सत्रह)	...	10
3.	शिव विवाह	(सात)	...	20
4.	निर्गुण (नाम-कीर्त्तन)	(सत्रह)	...	26
5.	सामाजिक सरोकार आलोक चेतना	(तेरह)	...	34
6.	राष्ट्रीय गीत	(पाँच)	...	42
7.	बारहमासा	(एक)	...	47
8.	फुटकर	(सात)	...	49

www.bhojpurisahityangan.com

श्रीराम नाम कीर्त्तन

1

केहू-केहू का होला राम नाम के चरचा ।।
कहीं-कहीं चढ़ल बाटे घरे-घरे नरचा ।
केहू-केहू का जोड़ाता रात-दिन के खरचा ।।
घोंसरिये में निकलल बा घर-घर के लरछा ।
केहू-केहू का निकले आपसे में बरछा ।।
गाँवें-गाँवे बाँटल जाला खेतवे के परचा ।
केहू-केहू का मिले पीये के ना तरछा ।।
पूरबी का चूक से सोहात नइखे चरचा ।
केहू-केहू का जइसे धूकल जाला मरिचा ।।
'मास्टर अजीज' गावस राम नाम के चरचा ।
केहू-केहू का फाटल मिलत नइखे गमछा ।।

2

मचिया बइठल रानी कोसिला, बालक मुख निरखेली हे ।
हे ललना, मोर बाबू प्राण के आधार, नयनवाँ बीचे राखब हे ।।
पानवा अइसन बारन पातर, सुपरिया अइसन ढुलमुल हे ।
हे ललना, फूलवा अइसन सुकुमार, चंदनवा अइसन गमकेलन हे ।।
बसंती बेअरिया अइसन चंचल, गंगा अइसन निरमल हे ।
हे ललना, चंचल चनरमा जस लिलार, कमलदल होंठ शोभे हे ।।
अँखियन में तीनों लोक समाइल, देवलोग हरसाइल हे ।
हे ललना, स्वर्ग के सुख आज आइल, आँगनवा छितराइल हे ।।
गाई के गोबर मंगवाइल, अँगना लिपवाइल हे ।

www.bhojpurisahityangan.com

हे ललना, गजमती चउका पुराइल, बबुआ के बइठाइल हे ।।
'मास्टर अजीज' सोहर गावलेन, गाई के सुनावेलन हे ।
हे ललना, जुगे-जुगे बढ़ो एहवात, महलिया उठे सोहर हे ।।

3

धन्य-धन्य अवधऽ नगरिया विहँसे सरयू लहरिया नु हे ।
ललना हे, धन्य-धन्य दशरथ के भागऽ कोसिला कोखि राम अइलन हे ।।
धन्य-धन्य चइतऽ महीनवाँ कि नमी शुभ दिनवाँ नु हे ।
ललना हे, धन्य-धन्य दिन दुपहरिया कि रामऽ अवतार लेलन हे ।।
घरे-घरे बाजेला बधइया कि गूँजे शहनइया नु हे ।
ललना हे, सखी सभे मंगल गावस, खुशिया लुटावस हे ।।
गुरु बशिष्ठ सुदीनि देखलन नाम के उचारेलन हे ।
ललना हे, मधुरी-मधुरी वेदवाणीउच्चारे ब्राह्मण ज्ञानी नु हे ।।
देव लोक भइले आनन्दऽ कि गह-गह करे इन्द्र लोक हे ।
ललना हे, फूलवा के होला बरसात, महलिया होला सोहर हे ।।
फूलवा फूलेला कचनारऽ कि मधुर बयार बहे हे ।
ललना हे, गमके सुगंध फुलवरिया, नगरिया सुहावन लागे हे ।।
चारु ओरऽ खुशी छितराइल कि चिरई चहचहाइल नु हे ।
ललना हे, ऋषि-मुनि करे जयजयकार कि भक्त सब निहाल भइलन हे ।।
राजा लुटावे अन्न-धन रुपइया, त रानी धेनु गइया नु हे ।
ललना हे, परजा लुटावे बधइया गोसईया अवतार लेलन हे ।।
दास 'अजीज' सोहर गावेलन, मन हरसावेलन हे ।
ललना हे, धन्य बाटे धरती के भाग कि राम पाँव धरे नु हे.... ।।

4

सखिया-सलेहर सब कइली तइयारी, चुन-चुन के देहब ।
दुलहा तोहरा के गारी, चुन-चुन के देहब ।।

www.bhojpurisahityangan.com

अवध नगरिया के रीत बा निराली, चुन-चुन के देहब ।
हई कइसन महतारी, चुन-चुन के देहब ।।
खीर खाई माई तोहर बेटा जनमवली, चुन-चुन के देहब ।
किया बाप तोर बारन अनारी, चुन-चुन के देहब ।।
दूगो भइया गोर काहे दूगो करियारी, चुन-चुन के देहब ।
हमरा शंका होला भारी, चुन-चुन के देहब ।।
आइल बराती जइसे भीड़ बेशुमारी, चुन-चुन के देहब ।
जुटल मेला में भिखारी, चुन-चुन के देहब ।।
समधी के सांस अइसन फूलेला भांथी, चुन-चुन के देहब ।
का ई करेलन लोहारी, चुन-चुन के देहब ।।
मिथिला के बेटी सब खेत में उपजे, चुन-चुन के देहब ।
का जरूरत बा बाप-महतारी, चुन-चुन के देहब ।।
तोहर सिया बेटी हर-हरवाहा के, चुन-चुन के देहब ।
कइसे कहाली राजकुमारी, चुन-चुन के देहब ।।
'मास्टर अजीज' मोरी सिया सुकुमारी, चुन-चुन के देहब ।
तू अइल बन से उघारी, चुन-चुन के देहब ।।

5

बजाव भइया बाजावाले जनक नगर में ।।
बाजा से निकले तान, 'हरे-कृष्ण हरे-राम ।
शूर-वीर रुक जाये जातऽ समर में ।। बजाव०।।
बाजा के सुनी बोलऽ, तपसी लोग जाये डोलऽ ।
राम-धुन गूँजे लागे सभनी का घर में ।। बजाव०।।
बाजा से निकालऽ धुन, सगुन चाहे निरगुन।
भूलहूँ ना पावे ई सारी उमर में ।। बजाव०।।
अइसन बजावऽ तान, ऋषि लोग के टूटे धेयान।
चले से नाचे लागे चलत डगर में । बजाव०।।
अइसन बाजावऽ बोल, ज्ञानी-गुनी जाये डोल।
'मास्टर अजीज' जगीहन आठो पहर में ।। बजाव०।।

www.bhojpurisahityangan.com

6

कवनऽ रहिया सिया गइली दे विपतिया ।।
नाहीं कहीं लउके कवनो चिन्हवा-निशनिया ।
सुनीं ना शब्द कवनो रोअत सिया रनिया ।
वियोग अगिया सिया धनकता छतिया ।
कवनऽ रहिया सिया गइली दे विपतिया ।।
तनी एक बता दऽ पता चहकत चिरइया ।
कवना ओरी गइली सिया छोड़ि के मड़इया ।
कवनऽ जोगिया मरलक सिया तोहर मतिआ ।
कवनऽ रहिया सिया गइली दे विपतिया ।।
तूहूँ कहीं देखलऽ बोलऽ गऊ रे बछरुआ ।
करे रखवाली जेकर चाँद रे पहरुआ ।
लउकतऽ नइखे सिया डगर रहतिया ।
कवनऽ रहिया सिया गइली दे विपतिया ।।
फूल-फुलवाड़ी तूं जागे लऽ दिनऽ रतिया ।
कतहीं देखलऽ तूंहूँ सिया के सुरतिया ।
भयावन लागेला चाँद तारा के बरतिया ।
कवनऽ रहिया सिया गइली दे विपतिया ।।
गाछऽ-बिरिछऽ बोलऽ घासऽरे पतइया ।
सिया के रोअत देखलऽ आँखि के पुतरिया ।
बीतिहन कइसे कलपत लमहर दिन-रतिया ।
कवनऽ रहिया सिया गइली दे विपतिया ।।
नदी-नाला देखलऽ कहीं जनकदुलारी के ?
वदन कुम्हलाइल जइसे फूल फुलवारी के ।
कइसे सहीहन सिया विपत्त अफतिया ।
कवनऽ रहिया सिया गइली दे विपतिया ।।

www.bhojpurisahityangan.com

साँचऽ भइले नारद तोहरो बचनिया ।
सिया बिनु सून लागे हमरो जिनगिया ।
कइसे कटिहन दिन सिया बिन संघतिया ।
कवनऽ रहिया सिया गइली दे विपत्तिया ।।
'मास्टर अजीज' अजीब अचरज गोसईयां ।
जग के चलावे ऊहे भइल निरुपइया ।
कइसनऽ बाटे ना लीला राम के करमतिया ।
कवनऽ रहिया सिया गइली दे विपतिया ।।

7

कलपेली सिया रानी राम के बियोगवा,
तोहर धनवा बिलखेला वनवाँ हो राम ।
कवन कसूर कइलीं घर से निकालल गइलीं,
केहू ना बतावे इहो बतिया हो राम ।
इयाद करी फाटे छाती एको ना पेठवले पाती,
पिरितिया काहे के लगवलऽ हो राम ।
रूठी गइले हँसी-खुशी, केकरा से हाल पूछीं,
बिपतिया भइली मोर संघतिया हो राम ।
सांवरी सलोनी तोहर बिसरे ना सुरतिया,
मूरतिया बनी बसे मोरा मनवाँ हो राम ।
एकेगो करीहऽ ज्ञान, आपन तू रखिहऽ ध्यान,
जिनगी के कवनो ना ठिकानावा हो राम ।
'मास्टर अजीज' जिया 'पिया-पिया' पिहुके,
पपिहरा पिहुके जइसे वनवाँ हो राम ।

●

www.bhojpurisahityangan.com

अनकर के बूझेलू बेकार नेटवा ।। नटखट .....
'मास्टर अजीज' तनिको जे हम बोलीं
भीड़ जालन कान्हा सम्हार फेंटवा ।। नटखट .....

5

गगरी मोर फोड़ देलन कन्हैया ।
पानी भरे जात जब हमनी के देखे, रहेलन बटिया अगोर ।। गगरी०।।
बान्हल केस हमनीके सझुरावेलन, खोलेलन साया के डोर ।। गगरी०।।
कहेली सखिया सुनऽ ए जसोदा, चसकल ललनवाँ बा तोर ।। गगरी०।।
चोटी पकड़ी कान्हा सबके नचावेलन, देहिया दिहलन झकझोर ।। गगरी०।।
आपन विपतिया हम कतना बखानी, दरदिया उठेला पोरे-पोर ।। गगरी०।।
साँचे कहीं कान्हा बसहूँ ना देतन, तनिको जे रहतन ई गोर ।। गगरी०।।
कतनो बुझाईं ई तनिको ना वूझे, ई त नान्हें के हवन मुँहजोर ।। गगरी०।।
अब कवहूँ जे बोलिहन कन्हइया, करब तीनों लोक में शोर ।। गगरी०।।
कहत 'अजीज' शनिचर के दिन रही, करब पंचायत बटोर ।। गगरी०।।

6

छोड़ऽ छोड़ऽ मोहन हमरी अंचरिया, अबहीं लरिका बारऽ ।
काहे देलऽ देहिया उघार, अबहीं लरिका बारऽ ।।
सारी-चोली फाड़ि दिहल, बाँहियाँ मरोड़ल, अबहीं लरिका बारऽ ।
काहे करेलऽ तकरार, अबहीं लरिका बारऽ ।।
श्री वृन्दावनवाँ में गइया चरावेल, अबहीं लरिका बारऽ ।
चसकल बा मनवाँ तोहार, अबहीं लरिका बारऽ ।।
पिरितिया के बीचे नाहीं करऽ अनीतिया, अबहीं लरिका बारऽ ।
कहत बारन सकल संसार, अबहीं लरिका बारऽ ।।
नार के कटाई अबहीं माँगे चमइनिया, अबहीं लरिका बारऽ ।
कहिया से भइलऽ होशियार, अबहीं लरिका बारऽ ।।
दूधवा के दाँत अबहीं टूटहूँ ना पवले, अबहीं लरिका बारऽ ।

www.bhojpurisahityangan.com

अबहीं से बने लगल रार, अबहीं लरिका बारऽ ।।
कहत 'अजीज' जब होइब सेयान, अबहीं लरिका बारऽ ।
पूरा करब लालसा तोहार, अबहीं लरिका बारऽ ।।

7

मइया मनिह जनि झुठ बचनिया, इनकर बिगड़ल रहनिया ना ।।
ई गोपी जरिए के भखठल, नहाली लंगटे बदनिया ।
जे इनका के हम समुझाईं, उलटे करस बदनमिया ।।
इनकर बिगड़ल रहनिया ना ।।
झमकी-मटकी के चले रहतिया, माथे गगरी भरल पनिया ।
गिर गगरी टूट-फूट गइले, अईठत चले जस नगिनिया ।।
इनकर बिगड़ल रहनिया ना ।।
बरजोरी दही मुँह लगावे, कहेली कि चाटऽ चटनिया ।
हम तनिको इनका से बोलीं, मारस धइले चटकनिया ।।
इनकर बिगड़ल रहनिया ना ।।
सुन वंशी-धुन नाचन लागे, अजब वा इनकर चलनिया ।
बाँह मरोड़ी हमके नचावे, बनाके भांड़ नचनिया ।।
इनकर बिगड़ल रहनिया ना ।।
मारी चटकन देवे, जब मानीं ना इनकर कहनिया ।
हम डरे बोलहूँ ना पायीं, उलटे में देत ओरहानिया ।।
इनकर बिगड़ल रहनिया ना ।।
औरत के औरत पतिआसु, बेटा के बिगड़ल रहनिया ।
हम तोहरा कोखी ना जनमी, गोदी में पवलीं शरनिया ।।
इनकर बिगड़ल रहनिया ना ।।
लोर बूंद मोती जस देखि, मइया के भरल आँख पनिया ।
भरि अंकवारी जसोदा मुँह चूमे, सखी सभे करे पछतनिया ।।
इनकर बिगड़ल रहनिया ना ।।
'मास्टर अजीज' छाती से फूटल, ममता के उमरल रवनिया ।
गोदी ममता इतना बरसे, कान्हा कइलन असननिया ।।
इनकर बिगड़ल रहनिया ना ।।

www.bhojpurisahityangan.com

8

दे के वरदानवाँ काहे भूललन बचनवाँ, ए ननदिया मोरी हे।
जाई के बसेलन कवना देश, ए ननदिया मोरी हे॥
रतिया के छतिया में बतिया जरेला, ए ननदिया मोरी हे।
विरहा सतावे हरमेश, ए ननदिया मोरी हे॥
जोहते डगरिया हमरो फूटले नजरिया, ए ननदिया मोरी हे।
थोड़े दिन में पाके लागी केस, ए ननदिया मोरी हे॥
कहत 'अजीज' श्याम अइहन भवनवां, ए ननदिया मोरी हे।
पूजब हमऽ गौरी गनेस, ए ननदिया मोरी हे॥

9

बोलऽ बोलऽ कागा, मोरा साम के खबरिया।
कइसनऽ वारन ना, मोरा मन के मोहनवा॥
सखिया-सलेहर रोये, रोये धेनु गइया।
कइसनऽ वारी ना, सांवर साम के सुरतिया॥
खेत-खरिहान रोये, रोये मधुबनवा।
कइसनऽ वारी ना, उनकर वाँस के बँसुरिया॥
सिकहर टांगल रोये माखन के मटुकिया।
कइसनऽ वारी ना, नन्हकी बाँह के अँगुरिया॥
एने-ओने ताकीं-झांकीं, लउकं ना अँजोरिया।
सवतिनिया लागे ना, चंचल चमकत चन्दनिया॥
जहिया तू लइवऽ कागा, सामऽ के खबरिया।
वरदानवां देहव ना, जुग-जुग जिओ तोहर जोड़िया॥
'मास्टर अजीज' जिया कुहू-कुहू कुहुके।
कोइलिया कुहुके ना, जइसे भोर भिनसहरा॥

10

ए मुरलियावाले! नाहीं परत जिया चैन॥
जवसे गइले श्याम सुधियो ना लिहले,

www.bhojpurisahityangan.com

कन्हैया बिना मुँह से ना निकसेला बैन।
जल बिना मीन जइसे तरपत रात-दिन,
कन्हैया बिना जइसे तरपीं दिन-रैन ।। ए मुरलियावाले०।।
सइँया गोसइयाँ काहे सुधि बिसरवल,
कन्हैया बिना मनवा भइल बा बेचैन।
कुहुके 'अजीज' जइसे बन के कोइलिया,
कन्हैया बिना वइसे कुहुकीं दिन-रैन ।। ए मुरलियावाले०।।

11

छोड़िके भवनवाँ साम गइले मधुबनवाँ,
परानवाँ कइसे राखब हो साम।
कहिके गइले साम आइब हम सावनवाँ,
अरमानवाँ कइसे राखब हो साम।।
गवना के सरिया हमरो भइले ना धूमिलवा,
सगुनवा कइसे भाखब हो साम।
ताकत-ताकत हमरो अँखिया पिरइले,
पियर भइले हमरो देहिया हो साम।।
तोहरे बियोगवा साम फाटता छतिया,
धीरीजवा कइसे राखब हो साम।
कठिन कठोर कइलऽ काठ के करेजवा,
करेजवा कइसे समुझाइब हो साम।।
बिरहा के अगिया लागल जिनगी का बगिया,
करेजवा धह-धह धनके हो साम।
कहत 'अजीज' तोहर सांवरी सुरतिया,
घवाहिल कइले छतिया हो साम।।

12

श्याम सलोनी तोहर बिसरे ना सुरतिया,
दर्शनवाँ दीहीं ना, कलपत बाटे मोर परानवाँ।

www.bhojpurisahityangan.com

जहिया से गइले मोहन मिले ना चैनवा,
नयनवाँ बरसे ना, जइसे सावन के महीनवाँ ।
इयाद जब आवे सांवर श्याम के सुरतिया,
बेआकुल होखे ना, दूनो आँखि के पुतरिया ।
उठेला करेजा हूक, तनिको ना लागे भूख,
वैरनिया भइली ना, मोरी आँख के निन्दिया ।
कतनो हम जतन करीं, आवे ना चैनवाँ,
जवनिया भइली ना, बिना नाग के नगिनिया ।
घरऽ-दुआरऽ-अँगना काटे जे धावेला,
चन्दनिया बरिसे ना, जइसे लहकत अगिनिया ।
'मास्टर अजीज' धनके हरदम छतिया,
करिया भइले ना, गोर कोमल मोर बदनिया ।

13

ए कन्हइया मोर, गइलऽ कवना देसवा के ओर ।।
विरहा का अगिया में धनवेकला देहिया,
ए कन्हइया मोर, उठेला लहरिया पोरे-पोर ।
दिनवाँ ना चैन आवे, रातऽ ना निन्दिया,
ए कन्हइया मोर, रतिया जागल होला भोर ।। ए कन्हइया०।।
बरसी-बरसी रोये कारी रे बदरिया,
ए कन्हया मोर, छाती पीटी-पीटी करे शोर ।
बागऽ-बगइचा रोये गाछऽ-बिरिछया,
ए कन्हइया मोर, छछनी-छछनी रोये मोर ।। ए कन्हइया०।।
बगिया का गलिया में सुसुवेकली कलिया,
ए कन्हइया मोर, कहाँ गइलें भँवरा मुँहजोर ।
अँगना–दुआर रोये, रोये धेनु गइया,
ए कन्हइया मोर, बछरू का अँखिया भरल लोर ।। ए कन्हइया०।।
पागल पपीहरा भइलें, कुहुके कोइलिया,
ए कन्हइया मोर, बेयाकुल भइलें चाँद बिन चकोर ।

www.bhojpurisahityangan.com

खेत-खरिहान रोये सड़कऽ-डगरिया,
ए कन्हइया मोर, कहवाँ भुलइलन चितचोर ।। ए कन्हइया० ।।
जमुना बेयाकुल भइली, छटपट लहरिया,
ए कन्हइया मोर, तोहरा बिनु कतहीं ना अँजोर ।
'मास्टर अजीज' रोये, रोये गोकुल नगरिया,
ए कन्हइया मोर, रोअते-रोअते होला भोर ।। ए कन्हइया० ।।

14

काहे, श्याम भइले निरमोहिया, ए उधो बाबा, विरहा सतावेला
एकऽ बात कहिहऽ जाके, चिट्ठी दिहऽ श्याम हाथे;
चिट्ठी पढ़ी फाटी उनकर छतिया ।
श्याम के वियोगवा में, पड़ीं गइलीं रोगवा में;
निन्दियो ना आवे दिन-रतिया ।। ए काहे ।।
दिन के ना आवे चैना, काटे धावे विरहा रैना;
बिसरे ना श्याम के सुरतिया ।। ए काहे ।।
काहे के लगवलन नेह, पीअर भइले हमरो देह;
मारल गइले हमरो सारी मतिया ।। ए काहे ।।
श्याम के जब आवे इयाद, बिरहा करेला नादऽ;
बरे लागे छतिया में बतिया ।। ए काहे ।।
'मास्टर अजीज' गाई, सुन राधा चित्त लाई;
श्याम बसे भक्तन के भितरिया ।। ए काहे ।।

15

उधो बाबा, झूठ तोहर पंडिताई ।।
हमसे कहेलऽ प्रेम भुलाके, गेयान के रटीं चौपाई ।
छोड़ि साकार के निराकार से, कइसे के नेह लगाई ।।
प्रेम पावन पवन जस पसरल, निस-दिन बहे चौउपाई ।
बिना प्रेम के सृष्टि ई कइसे, हमरा के दऽ ना समुझाई ।।

www.bhojpurisahityangan.com

ज्ञान नाहीं मरूभूमि उपजे, ना ह ई जन्तु हवाई।
नाहीं गेयान सागर उपजे, नाहीं पाताल बोआई।।
भौतिक तत्त्व में ज्ञान उपजे, प्रेम के होखेला सिंचाई।
बिना तत्त्व के गेयान कहाँ से, बिन फूल गंध ना आई।।
माया के ह ई तन कोठरी, बहे पवन उड़ी जाई।
जे एकरा के हम पतिआईं, ज्ञान तोहर कहवाँ लुकाई।।
कहेलऽ छोड़ि आकृति के, दउरीं पीछे परिछाईं।
जे रहल बगिया के माली, ऊ बालू में कइसे लोटाई।।
आँखिन देखि झूठ बतावेलऽ, अनदेखी के पतिआई।
जे दिन ई तन माटी मिलिहन, ज्ञान के धूरा उड़ी जाई।।
ई ज्ञान-गठरी उहाँ जनि खोलिहऽ, होखे जहाँ प्रेम के सगाई।
ई गठरी मरघट में खोलिहऽ, भूत-बैताल के लोभाई।।
ई सुन्नर तन प्रेम बसेला, फूल में सुगंध समाई।
ज्ञान के गोबर गींजल छोड़िके, प्रेम के पढ़ी लऽ पढ़ाई।।
'मास्टर अजीज' आजीज मत करिहऽ, साम के दीहऽ समुझाई।
बिना साम के कल ना पड़त बा, चाँद-चकोर के नाईं।।

16

कहवाँ लगवलीं अतना देरी हो, श्रीकृष्ण भगवान।
बाल ग्वाल के दुख से बचवलीं,
नख पर गिरिवर रउए उठवलीं।
नइयाँ पड़ल गिरिवरधारी हो, श्रीकृष्ण भगवान।।
जब-जब भीड़ पड़ेला भक्तन पर,
पापी के कोप गिरेला सज्जन पर।
तब-तब लिहलीं अवतारि हो, श्रीकृष्ण भगवान।।
दुष्ट दुशासन चीर उघारे,
भरी सभा में द्रौपदी पुकारे।
अबकी के बेरिया हमारी हो, श्रीकृष्ण भगवान।।

www.bhojpurisahityangan.com

'मास्टर अजीज' कीर्त्तन गावे,
रउरे से आपन अरजी सुनावे ।
रउआ हईं अधम-उधारी हो, श्रीकृष्ण भगवान ।।

17

हमार गोइंआँ हमरे के छकावे ।
हमरे खेलावल ई हमके खेलावे,
हमार गोइंआँ, कभी धुड़की देखावे ।।
हमरे सिखावल ई, हमके हुरुकावे,
हमार गोइंआँ हम पर आँख चमकावे ।
बिलाई देखाके ई घर में बोलावे,
हमार गोइंआँ पतुकी-मटुकी चोरावे ।।
बोले-ना-चाले कभी भोला बुझाला ई,
हमार गोइंआँ कनखी-मटकी चलावे ।
कहे-ना-सुने चुपे सट जाला पंजरिया,
हमार गोइंआँ गँवें अँगुरी दबावे ।।
सारी-चोली फाड़े कभी करे बरजोरिया,
हमार गोइंआँ चाहे लंगटे नचावे ।
हाथ के इशारे कभी वंशी बजा के,
हमार गोइंआँ ओट कदम बुलावे ।।
लाजऽ-शरम एकरा तनिको ना आवे,
हमार गोइंआँ सबसे रास रचावे ।
प्रीतऽ के रीतऽ ई तनिको ना जाने,
हमार गोइंआँ हमरे के भरमावे ।।
आत्मा परमात्मा के खेल ई जे बूझे,
हमार गोइंआँ उहे अकिला कहावे ।
'मास्टर अजीज' इहे कीर्त्तन रोज गावे,
हमार गोइंआँ झाल-ढोलक बजावे ।।

●

www.bhojpurisahityangan.com

शिव-विवाह

1

जब हो शिवजी विहअन चललन,
बसहा पर भइलन असवार हे।
मली-मली देहिया में भभूति लगवलन,
गरदन में सरपन के हार हे।
कानवाँ में बिछुअन के कुंडल शोभे,
कमर में शोभे मृग-छाल हे।
मुखवा में पान नाहीं, पतइन चबावेलन,
डमरू-तिरसूल शोभे हाथ हे।
जट्टा के बढ़ाई शिव मुकुट बनवलन,
ओपर बहे गंगाजी के धार हे।
भूत-बैताल शिव के बने बरिअतिया,
हर्रा-बिर्नी चले बेशुमार हे।
ऋषि-मुनि-देव लोग चंवर डोलावेलन,
डायन-जोगिन परिछस दुआर हे।
इतर-गुलाल शिव का मनहूँ ना भावे,
चन्दन के अजबे बहार हे।
जंगल में मंगल अजवे सुहावन,
तीनो लोक भइले निहाल हे।
'मास्टर अजीज' हम कहाँ ले बखान करीं,
शिवजी के महिमा अपार हे।।

www.bhojpurisahityangan.com

2

बर महादेव हिमाचल जब पहुँचे,
चारो ओर मचल हाहाकार हे ।
सासू मैना जब देखेली शिव के,
पीटी-पीटी धूनेली कपार हे ।
नारद बाबा के हम कुछ ना बिगड़लीं,
खोजी दिहलन वर बउराह हे ।
अइसन बउराह वर से गउरा ना बिअहब,
भले गउरा रहिहें कुंआर हे ।
आपन गउरा लेइ डुबी-धंसी जाइब,
का हो विधना लिखलन लिलार हे ।
मातु के बेहाल जब गउराजी देखली,
निरखेली शिव मुँह उघार हे ।
तनी-सा महादेव रूप रउआ बदलीं,
घर-गाँव-जग पतिआस हे ।
अतने में शिवजी रूप बदलनी,
सुन्दर सलोना सुकुमार हे ।
गगन से देव लोग फूल बरिसावेलन,
तीनो लोक भइल जयजयकार हे ।
सासू मैना देवी समझी ना पवली,
शिवजी के महिमा अपार हे ।
'मास्टर अजीज' ई बखान कइसे करिहन,
वेद-पुरान गइलन हार हे ।

3

शिवजी के अइले वरिअतिया,
हे सखी, चलऽ वर परीछे ।।
जल्दी नहा लऽ, जल्दी धोआ लऽ,

www.bhojpurisahityangan.com

हाली-हाली करऽ अपटनवा, हे सखी, चलऽ वर परीछे ।।
हाथ हथेली जल्दी मेंहदी रचा लऽ,
अंग-अंग पहिनलऽ गहनवा, हे सखी, चलऽ वर परीछे ।
चुनरी पहिन लऽ, अंगिया पहिन लऽ,
पहिन लऽ ना लहंगा-पटोरवा, हे सखी, चलऽ वर परीछे ।
जुड़ा वन्हा लऽ, मंगिया संवार लऽ,
बीचे-बीचे करिलऽ सेनुरवा, हे सखी, चलऽ वर परीछे ।
बिन्दिया लगा लऽ, टिकुली सजा लऽ,
अँखिया में भर लऽ काजरवा, हे सखी, चलऽ वर परीछे ।
आइल सुन्नर वरऽ, खिलिहें आँगन-घर,
करि लऽ ना बत्तीसो अभरनवा, हे सखी, चलऽ वर परीछे ।
सोरहो सिंगार करऽ, बत्तीसो अभरनवा,
देखि दुलहा होइहें हरानवा, हे सखी, चलऽ वर परीछे ।
अछतऽ-चन्दनऽ आउर पान के पत्ती,
मोट-मोट लेइ लिहऽ लोढ़वा, हे सखी, चलऽ वर परीछे ।
'मास्टर अजीज' अइसन दुलहा ना मिलिहें,
तीनो लोक के होई दरसनवा, हे सखी, चलऽ वर परीछे ।

4

अरे बाप रे बाप ! शिवजी के अजबे बरिअतिया ।।
अइसन दुलहा सखी कतहीं ना मिलिहन ।
ढूंढी आवे हाथे ले के वतिया ।। अरे०।।
सेहरा-ना-टोपी माथे नाहीं बा मउरिया ।
जट्टा ऊपर गंगा के लहरिया ।। अरे०।।
चन्दन ना टीका, मुँहें पान-ना-सुपरिया ।
अंग-अंग लागल भभूतिया ।। अरे०।।

www.bhojpurisahityangan.com

कुरता-ना-गंजी, कान्हे नाहीं बा चदरिया।
धोती नाहीं पेन्हले कमरिया।। अरे०।।
कमर मृगछाला, हाथे डमरू-तिरसूलवा।
अजबे डेरावन बा सुरतिया।। अरे०।।
बसहा बैल इनकर पालकी बनल वा।
साँप छोड़े गला फुफकरिया।। अरे०।।
जस दुलहा तस अइले बराती।
कहवाँ से अइले ई विपतिया।। अरे०।।
डाकिन-पिशाचिन लंगटे नाचत बा।
देत भूत-बैताल ललकरिया।। अरे०।।
केहू लंगड़ा, केहू काना बूझाला।
लूल्हा करे अजब करमतिया।। अरे०।।
हर्रा-विर्नी मिली बाजा बजावे।
गोजर-बिछी बनल बा नचनिया।। अरे०।।
बरात ना 'अजीज' इहो आइल बा अफतिया।
केहू के ना बाँची अब इजतिया।। अरे०।।

5

बउरहऊ बरिअतिआ सजइले बारन।।
मुँहवाँ में दाँत नइखे, भंगवा चबावेलन।
बसहा के पालकी बनइले बारन।। बउरहऊ०।।
माथा पर हर्रा-बिर्नी खोंता लगइले बा।
गरदन में साँप लटकइले बारन।। बउरहऊ०।।
भूत-बैताल सब काटे धावे।
एकनी के भोला चसकइले बारन।। बउरहऊ०।।
डाकिन-पिशाचिन नाचत बा लंगटे।
डमरू बजा के परिकइले बारन।। बउरहऊ०।।
गोजर-बिछी कान कुंडल बनल बा।

www.bhojpurisahityangan.com

देहवा में भभूति लगइले बारन ।। बउरहऊ०।।
'मास्टर अजीज' कहे गउँआ के नाश होई ।
अइसन जोगार बइठइले बारन ।। बउरहऊ०।।

6

शिवजी हवन सबसे बरिया, सुने ससुरिया में गरिया;
खइलन हुतुका के मार कोहबरिया में ।
बसहां बैल के असवरिया, साँप छोड़े फुफुकरिया;
केहू जात नइखे शिव का पंजरिया में ।।
बरात के अजब बा तइयरिया, केहू के टीके ना नजरिया;
भाग के छिपत बारन घर-धोनसरिया में ।
हर्रा-बिर्नी करे हहकरिया, पिशाचीन देवे ललकरिया;
देखि भागे लोग बाँस-बँसवरिया में ।।
केहू के खोंप जइसन कुबरिया, केहू के पेट बा घोनसरिया;
केहू के दाँत निकलल बरछा जस अगरिया में ।
केहू के लंगर बा टंगरिया, केहू हुचुकत चले डगरिया;
मइला महकत बाटे केहू का गतरिया में ।।
बरात आइल जब नगरिया, सभे बन्द कइलक केवरिया;
केहू सुसुकत बाटे जाके पिछुअरिया में ।
केहू पीटत बा कपरिया, देवे छाँटल-छाँटल गरिया;
आगि लागो अइसन अगुआ का नजरिया में ।।
केहू के मुँह बा सिअरिया, केहू के सुअर जस चेहरिया;
इयाद रही अइसन बरात भर उमरिया में ।
केहू छउकत जस बनरिया, केहू लेले हाथ खपरिया;
'अजीज' डर लागताऽ दिन-दुपहरिया में ।।

www.bhojpurisahityangan.com

7

मैना के मनावे खातिर लागल धरहरिया ।।
दुलहा के देखी मैना पीटेली कपरिया ।
धरती पछाड़ खाई धूनेली गतरिया ।।
डुबी-धंसी जाइब चाहे खाइब हम जहरिया ।
गउरा ना बिआहब चाहे दे दिहब महुरिया ।। मैना० ।।
आगी लागो बजर पड़ो नारद के नजरिया ।
मिलिहन त नोच लिहब पाकल-पाकल दढ़िया ।।
केहू पोंछे लोर, केहू सुघरावता पंजरिया ।
केहू लट सझुरावे, केहू संभारता अँचरिया ।। मैना० ।।
केहू समुझावे, केहू देखता संसरिया ।
केहू तरवा सुघरावे, केहू धोवता कपरिया ।।
केहू बेनिया डोलावे, केहू भरे अंकवरिया ।
केहू देवे पानी, केहू दाबत अँगुरिया ।। मैना० ।।
'चुपऽ होखु, चुपऽ होखु, लिखल जे लिलरिया ।
भाभी के बनावल जोड़ी रही भर उमिरिया ।।
'मास्टर अजीज' शोक में डूबल बा नगरिया ।
धन्य हे महादेव तनि लिहीं ना खबरिया ।। मैना० ।।

•

www.bhojpurisahityangan.com

निर्गुण (नाम-कीर्त्तन)

1

दियरवा कहवाँ से हम पाईं।
ए दियरा के जे-जे पवलक, ज्ञानी-गुनी कहाई।
ऋषि-मुनि आ साधु-महात्मा, सबके राह दिखाई ।।
ई दियरा मंदिर में गइले, राम-कृष्ण मुसकाई।
ई दियरा मस्जिद में गइले, अल्लाह के नूर दिखाई ।।
ई दियरा ना खेत में उपजे, ना ई हाट बिकाई।
ई दियरा ना खान से निकले, ना कारखाना बनाई ।।
माया के जब आवे बेअरिया, दियरा के देला बुताई।
आँख अछइत कुछऊ ना लउके, नरक में सरग बुझाई ।।
कहत 'अजीज' एह कलजुग में, प्रेम बिन भक्ति ना आई।
ई दियरा भक्ति से उपजे, जे चाहे ले जाई ।।

2

राम कहऽ, राम कहऽ, राम कहऽ, मनवाँ ।।
चाहे तू जनाना होखऽ, चाहे मरदानवाँ।
लरिका चाहे बूढ़ा होखऽ, चाहे नौजवानवाँ ।। राम०।।
भजन से ओकाई आवे, जालऽ ताड़बानवाँ।
'ताड़ी से बीमारी छूटे'-सोझे बा बहानावाँ ।। राम० ।।
झूठ रोज बोलत बारन, मुख से बचनवाँ।
गाँव के लड़ावत वारन, बनके परधानवाँ ।। राम० ।।

www.bhojpurisahityangan.com

होखऽ तू चमार चाहे होखऽ तू बाभनवाँ।
मरला का बाद जइबऽ, एके असमसानवाँ ।। राम० ।।
सुनऽ तूँ मिल्लाद चाहे गावऽ कीर्त्तनवाँ।
कहऽ तूँ अल्लाह चाहे कहऽ भगवानवाँ ।। राम० ।
वेद-पुरान पढ़ऽ चाहे पढ़ऽ कुरानवाँ।
कहत 'अजीज' हउअ एके संतानवाँ ।। राम० ।।

3

भजन बिना जनम अकारथ जाई ।।
भजन करत गनिका तरी गइल, तरी गइल सदन कसाई।
भजन करत शेबरी राम के जूठा बइर खिआई ।।
भजन कर वाल्मीकि डाकू से संत कहलाई।
देख 'रामायण' वाल्मीकि के, ज्ञानी के माथा चकराई ।।
भजन करत मीराजी तरी गई, केहू से रहे ना लजाई।
भजन करत तुलसीजी तरलन, तरी गइल गिद्ध जटाई ।।
तुलसी 'तुलसीदास' कहइलन, अद्भुत लिखी चौपाई।
भजन करत हनुमानजी क्षण में, लंका के दिहलन जराई ।।
भजन करत प्रहलादजी तरी गइले, आग जरावे ना पाई।
भजन करत अहिल्याजी तरली, पथर से नारी हो जाई ।।
दास 'अजीज' बिना ब्रह्म-ज्ञान के, कुछऊ नाहीं भेंटाई।
जे ज्ञानी नर ब्रह्म के समुझिहें, उहे पार हो जाई ।।

4

र मन मूरख निपट अनारी ।।
खोजत फिरे कावा-काशी, ले के धरम लुकारी।
मन-मंदिर में राम बसत है, काहे दिहलें विसारी ।। रे मन०।।
चंदन-टीका माथे लगवलऽ, लंबा बढ़वलऽ दाढ़ी।
मंदिर-मस्जिद ऊँचा बनवलऽ, रतन-जड़ल केवारी ।। रे मन०।।

www.bhojpurisahityangan.com

पाँच महल पंचमंजिला मंदिर, ओमें दस दुआरी।
ओही मंदिर में बसे देवता, उनकर कवन पुजारी ।। रे मन०।।
'मास्टर अजीज' ज्ञान-गुन बिना, चहुँओर लउके अन्हारी।
सतगुण नाम के नाव बनालऽ, भवसागर से उतारी ।। रे मन०।।

5

रटतऽ-रटतऽ रहीं पिया के नगरिया,
ए ननदिया मोरी हे, मिले नाहीं पियवा हमार।
मइल-कुचइल भइले गवना के सरिया,
ए ननदिया मोरी हे, भइले ना गवना हमार।।
आवहूँ ना पइले मोरा गवना के खबरिया,
ए ननदिया मोरी हे, पिया लइलें डोलिया-कहार।
कबहूँ ना सुतलीं हम सईंया के सेजरिया,
ए ननदिया मोरी हे, भइलीं लरकोर तीन बार।।
हँसत-खोलत रहीं सईंया के नगरिया,
ए ननदिया मोरी हे, नइहर में पियवा हमार।
'अजीज' हम मिलाइब कइसे सईंया से नजरिया,
ए ननदिया मोरी हे, हम त हईं छाँटल छिनार।।

6

सखिया झूठ ह ई दुनिया रंगीली ।।
ई दुनिया ह माया मोहनी, बोले बैन रसीली।
रूप-रसिक कंचन काया, आँख बा अजब नसीली।।
सुन्दर सूरत मोहनी मूरत, ई छउकत छैल छबीली।
जेह दिन प्राण काया से निकली, का होई सूरत रंगीली ।। सखिया०।।
चार दिन के चाँदनी जइसन, जिनगी बा चमकीली।
माटी के काया माटी मिली जाई, रही ना सूरत शरमीली।।
सुन्दर नागिन देखन लागे, भूलऽ ना ह ई जहरीली।

www.bhojpurisahityangan.com

ऊ सोना हरदम ना होखे, हर एक चीज चमकीली ।। सखिया०।।
प्रेम अमर अमृत जस होखे, उपजे ना खेत भरकीली ।
निरगुन ज्ञान गोचर में उपजे, माटी जेकर पथरीली ।।
दास 'अजीज' आस प्रभु के, जनि बनऽ झूठे हठीली ।
जवना रूप पर जान लुटाव, ह माया छैल-छबीली ।। सखिया०।।

7

पिआसे मरत काहे मछरिया ।।
क्षण में उगत, क्षण में डूबत, क्षण में धावे कगरिया ।
क्षण-क्षण छउके, छछने पिआसे, धूनत रहे कपरिया ।।
जल में जनमत, जल में पलत, जले में बीतत उमरिया ।
जल में जिअत, जल ही में मुअत, केहू ना लेत खबरिया ।।
'जल जीवन ह' भेद ना जानत, माया के बाँटत रसरिया ।
माया के बस मरम ना जाने, गला में डालत फँसरिया ।।
सत् सागर जल परम ब्रह्म के, ऊपर बा माया के बजरिया ।
गेयानहीन मूरख ना बूझे, पदारथ सत् भितरिया ।।
बिन गुरु ज्ञान कहाँ से पावे, चल जा गुरु के नगरिया ।
कहत 'अजीज' राम नाम के, भरि-भरि ले जा गगरिया ।।

8

रमइया भजऽ रामा हो सियारामा ।।
मुख से राम नाम कहना, कर से ताली भी बजाना ।
ना त होई पीछे पछताना, हो सियारामा ।। रमइया०।।
बिना टिकट के जइबऽ, उहाँ चैंकिंग में पकड़इबऽ ।
उहाँ करबऽ का बहाना, हो सियारामा ।। रमइया०।।
बिना टिकट के केस, होइहें हाकिम इहाँ पेस ।
होइहें जेहल-जुलबाना, हो सियारामा ।। रमइया०।।
'मास्टर अजीज' कहे करजोर, इहे अरजी बा मोर ।
बन जा भक्ति के खजाना, हो सियारामा ।। रमइया०।।

www.bhojpurisahityangan.com

9

मोरे मने बसल हरिकीर्त्तन गीता ।।
वेदऽ, पुरानऽ, कुरानऽ अरु गीता ।
जटवा से गंगा बहेली पुनीता ।।
राजा दशरथ जस कहीं लोग पिता ।
भाई कहीं लछुमन कि जोरू कहीं सीता ।।
सूरदास तीनों लोकवा से जीता ।
'मास्टर अजीज' उहे गावत बारन गीता ।।

10

आपन कुशल चाहऽ हट जा माया जाल से ।
हरि के भज लऽ ख्याल से ना ।।
भारी राजा रहलन रावण , राज कइलन चौधरी पावन।
आपन किला तुरवइलन बन्दर-भाल से ।। हरि के. ।।
कंस रहलन भारी बलवान, जेके जानता जहान ।
मारल गइलन आपन बहिनी के लाल से ।। हरि के. ।।
भज लऽ हरि जी के नाम, बिगड़ल बनी जइहन काम ।
'मास्टर अजीज' ना बचब कौनो काल से ।। हरि के. ।।

11

पृथ्वी कहे कि हम सबसे बड़ो, कि दुनिया के बोझ उठायो है ।
शेष कहे कि हम सबसे बड़ो, कि पृथ्वी का भार संभारो है ।
शेष बड़ो कि महेश बड़ो, जो गरदन में लटकायो है ।
महेश बड़ो कि रावण बड़ो, जो एके बाण हिलायो है ।
रावण बड़ो कि राम बड़ो, कि एक ही बाण गिरायो है ।
राम बड़ो कि भक्त बड़ो, जो अपना नाच नचायो है ।
कहे 'अजीज' नाम बड़ो है, जो सबको पार उतारो है ।

www.bhojpurisahityangan.com

12

राम भजन चित लाना जी, कबहूँ ना भुलाना ।
लाख चौरासी योनि भरम के, तब ई नर-तन पाना जी।
सारी-सारी रात ई नाचो में जागे, कथा-कीर्त्तन में अउंधानाजी।। राम० ।।
राम नाम पर दाम ना निकले, मुकद्दमा पर खेत बिकाना जी।
'मास्टर अजीज' के अरजी इहे बा, हरि-पद ध्यान लगाना जी।। राम० ।।

13

भजन बिना जइबऽ कवना ओरी ।।
भजन करत ना रामनाम के रहत खजाना बटोरी ।
ई खजाना लूट-पाट जइहन, रहब कतनो अगोरी ।। भजन०।।
राम नाम के बनल खजाना, कबहूँ होखे ना चोरी ।
छप्पड़ के ना सुधवा तनिको, छावत रहेलऽ ओरी ।। भजन०।।
भजन ज्ञान-भाव से उपजे, लागे छदाम-ना-कोरी ।
विना भजन नाव डूबी जइहन, खींचत रहब डोरी ।। भजन०।।
भजन से गिद्ध अजामिल तरलन, बाल्मिकी छोड़लन चोरी ।
सदन कसाई गनिका तरली, तरली अहिल्या कठोरी ।। भजन०।।
'मास्टर अजीज' नाम आधार बा, कहीं कलि में करजोरी ।
राम नाम से नेह लगा लऽ, जइसे चाँद चकोरी ।। भजन०।।

14

हमनी माया में भुलइलीं, पुन कुछ ना कइलीं हो ।।
खेत कोड़लीं, हर चलवलीं, बैलन के कहलीं घूम ।
'रुपिया-रुपिया' रटना लागल, इहे बाटे धून ।। हमनी० ।।
ऊँचा-ऊँचा महल बनवलीं, ओपर लगवलीं चून ।
अपना गाल के लाली खातिर, चूसत रहलीं खून ।। हमनी० ।।
गाछे चिरई खोंता लगावे, खर-पात चुन-चुन ।
आइल बेयार खोंता उड़ी गइलन, रह गइल डाढ़ी सून ।। हमनी० ।।
गुन-अवगुन हम कुछ ना बूझलीं, बाँचत रहलीं सगुन ।
निरगुन से निरमोही भइलीं, लंगटे नाचे फागुन ।। हमनी०।।

www.bhojpurisahityangan.com

सारा जीवन सुतले बीतल, जइसे सुतेला घुन।
'मास्टर अजीज' हरिनाम भज लऽ, बतिया लिहऽ सुन ।। हमनी०।।

15

प्रेम से हरिभजन गइबऽ,
ठेकाना तब पइबऽ।
दिन-रात आठो घड़ी,
'हरे राम' रटे के पड़ी।
हरि पर निशाना लगइबऽ ।। ठेकाना०।।
अनका धन पर आँख ना दीहऽ,
पर तिरिया निन्दा ना करिहऽ।
सवका से धन्य-धन्य कहइबऽ ।। ठेकाना०।।
घूमऽ-फिरऽ मथुरा-काशी,
जा अजमेर चाहे झांसी।
भजन में नेह लगइबऽ ।। ठेकाना०।।
हज करऽ चाहे गंगा नहा लऽ
करऽ मिलाद चाहे कथा सुना लऽ।
नाम के मन में वसइवऽ ।। ठेकाना०।।
मंदिर-ना-मस्जिद में बसे,
देखि-देखि तोहरा के हँसे।
मन में दीआ जरइबऽ ।। ठेकाना०।।
महल-अटारी कवना काम के,
'मास्टर अजीज' गुलाम राम के।
'शरण-शरण' गोहरइबऽ ।। ठेकाना०।।

16

भजन अवहूँ से करीलऽ नदान बुढ़ऊ।
झूठे कहेलऽ उमिरिया सेयान बुढ़ऊ ।।

www.bhojpurisahityangan.com

चारो धाम-फिरी अइलऽ, गंगा में कइलऽ असनान ।
बाबा धाम जलवा चढ़इलऽ, पूजा करेलऽ दूनो शाम ।।
कहाँ भगवन के मिलल पहचान बुढ़ऊ ।
भजन अबीहूँ से करीलऽ नादान बुढ़ऊ ।।
पोथी पढ़ि-पढ़ि उमर गँवइलऽ, प्रेम ना पढ़लऽ एको बार ।
वेद - पुरान - कुरान बतावे, प्रेम बिना सब कुछ बेकार ।।
पोथी रटला से मिली ना गेयान बुढ़ऊ ।
भजन अबहूँ से करीलऽ नादान बुढ़ऊ ।।
नाम भजन प्रेम रस भींजल, ओही में करीलऽ असनान ।
गुरु बिना ज्ञान कहाँ से आवे, गुरु बसे प्रेम के मकान ।।
खोजीलऽ पोथी में उनकर ठेकान बुढ़ऊ ।
भजन अबहूँ से करीलऽ नादान बुढ़ऊ ।।
माया में लपटाइल रहबऽ, भटकत रहबऽ अन्हारी ।
'अजीज' नाम के नाव बना लऽ इहे तोहें पार उतारी ।।
कब तक बनल रहबऽ अनजान बुढ़ऊ ।
भजन अबहूँ से करीलऽ नादान बुढ़ऊ ।।

17

रे सुगना सत् के बोली बोलऽ ।
सत् सूर कबहूँ ना भुलीहऽ, चीज ह बड़ा अनमोल ।।
भवसागर में नाव माया के रहेला डग-मग डोल ।
सत् पतवार छोड़ि हाथ से, काहे बनेलऽ बकलोल ।। रे० ।।
कांच कंचन चकमक चमके, लागल भरम के घोल ।
सत् कसौटी पर जेह दिन चढ़ी, खुली जाई सब पोल ।। रे० ।।
सत् गुरु सत्संग ना कइलऽ, घोंटत रहलऽ माया के घोल ।
प्रेम बिना सत् गुरु ना मिले, बोलऽ प्रेम के मीठी बोल ।। रे० ।।
कहत 'अजीज' हाट-बाजार में, सत् के ना लागे मोल ।
सत् नाम सत्संग में मिले, गेयान के पट खोल ।। रे० ।।

•

www.bhojpurisahityangan.com

सामाजिक सरोकार आ लोकचेतना

1

मरद लोग भुलाइल बाटे चानपटी चूल में।
जनाना लोग भुलाइल बाटे आइरिंग-कनफूल में ।।
बुढ़ऊ लोग भुलाइल बाटे गजरा के फूल में।
लरिका लोग भुलाइल बाटे बेसिक इस्कूल में ।।
काँग्रेस भुलाइल बाटे चोरियो का रूल में।
ज्यादा चोरबाजारी देखलीं रेल का महसूल में ।।
पंडित लोग भुलाइल बाटे चन्दन-तिरसूल में।
सिरूआ में भुलाइल मुल्ला नेह ना रसूल में ।।
जोगी लोग भुलाइल बाटे जट्टा-जुटी-झूल में।
साधु लोग भुलाइल बाटे धूनी अरु धूल में ।।
धरम-करम दूनो गइल समय का अनुकूल में।
ज्यादा लोग भुलाइल बाटे कागजे का फूल में ।।
हिन्दू-मुसलमान हो चाहे जनमे कवनो कुल में।
'मास्टर अजीज' बेसी कहल बा फिजूल में ।।

2

गुजर गइले मोरी सउँसे उमिरिया ।।
हाड़-मांस सूख गइले लउकेला ठठरिया।
भुखवा का आगी में जरेला अंतरिया ।। गुजर०।।
मूरत खातिर रोये नन्हकी जाके पिछुअरिया।
खोजत फिरीं गली-कूची झाड़-बंसवरिया ।। गुजर०।।

www.bhojpurisahityangan.com

बड़की सुसुके ठाढ़ी धइके दुअरिया।
घर में ना तेल कइसे जारीं हम दिअरिया ।। गुजर०।।
घर में ना धेला कइसे जाईं हम बजरिया।
दिअरी के दिन बबुआ माँगे फुलझरिया ।। गुजर०।।
आँख पथराइल 'अजीज' देखत डगरिया।
अँटकल आजादी कवना बाबू के अटरिया ।। गुजर०।।

3

बता दऽ भइया झगरू, ई काहे के झमेल बा।
दूनो ओरी करिया, दूनो ओरी गोर,
दूनो ओरी हँसी, दूनो ओरी लोर।
देखऽ तू खूनवाँ के कइसन ई मेल बा ।। बता दऽ०।।
दूनो के सुरूजवा करेला परिकरमा,
दूनो का अँगना में नाचे चनरमा।
कवनो ना अन्तर ई बूझला के खेल बा ।। बता दऽ०।।
एके गो अल्लाह बारन, एके गो राम,
केहू परनाम करे, केहू करे सलाम।
दूनो का लागल धर्म के नकेल बा ।। बता दऽ०।।
कहत 'अजीज' सिर्फ अन्तर बा बानी,
केहू माँगे 'आब', केहू माँगेला 'पानी'।
पूँजी का बजरिया में धक्का ठेलमठेल बा ।। बता दऽ०।।

4

ई बुढ़िया कुटनी उजार कइली टोला ।।
रात भर नींद ना आवे भोर जब होला।
होत फजीरे बांट अइली विषवे के गोला ।। ई बुढ़िया०।।
ए लोग के सभा घोंसरिए में होला।
घर-घर के चरचा जरिए से होला ।। ई बुढ़िया०।।
एह लोग का सामने बा सभे बकलोला।
मरदन के नचावतारी धइ के नकलोला ।। ई बुढ़िया०।।

www.bhojpurisahityangan.com

सुनके गरिआवत थोड़हन फिकिर नाहीं होला ।
सीताराम खुश रहिहन आबाद रही चोला ।। ई बुढ़िया०।।
'मास्टर अजीज' कहे नीमन नाहीं होला ।
तोहरा के नाश करिहन शिव बमभोला ।। ई बुढ़िया०।।

5

हम का जानीं रामजी इहाँ होइहें दुरगतिया ।।
एने-ओने मारल फिरीं कोई ना संघतिया ।
झर-झर आँख लोरे झरे, फाटताटे छतिया ।। हम०।।
केहू खाता हलुआ-पूरी, चाउर बासमतिया ।
फूटहा मोहाल हमरा, छछने रजमतिया ।। हम०।।
धर्म के ठीकेदारी करस खून के अढ़तिया ।
राम के पुजारी झेलस जेहल में बिपतिया ।। हम०।।
साधु के ना भीख मिले, माँगस दिन-रतिया ।
वेश्या घरे होखे नित नोट बरसतिया ।। हम०।।
'मास्टर अजीज' काहे मारल गइल राउर मतिया ।
राउरे बनावल दुनिया करेला अनीतिया ।। हम०।।

6

सुनीला कि भगवन ! रउआ सबके जनमाइले ।।
ओकरा के दिहलीं रउआ महल-अटरिया,
हमरा रहे के ना बा टूटही मड़इया ।
पानी से भींजेला देह, बबुआ के लुकाइले ।। सुनीला०।।
खटतऽ-खटतऽ दिन, आई जब रतिया,
अंग-अंग पिराला, ना सहात बा बिपतिया ।
सईयाँ के ना सुधि तनी, लरिको ना पिआइले ।। सुनीला०।।
ओकरा के दिहलीं रउआ तोसकऽ-रजइया,
हमरा ना बाटे सुधऽ टूटही चटइया ।

www.bhojpurisahityangan.com

सतावे जाड़ा लरिका के अँचरा ओढ़ाइले ।। सुनीला०।।
केहू खाला हलुआ-पूरी, ओपर से मलइया,
हमरा घरे चूल्हा रोये, करीं का उपइया।
नन्हका छरिआला, त चटकन लगाइले ।। सुनीला०।।
'मास्टर अजीज' अब सहाला ना विपतिया,
कलपत बीतेला हमार दिन आउर रतिया।
केकरा के दोष दीहीं, भाग के गरिआइले ।। सुनीला०।।

7

अँखिया में जब नीन्द ना आवे, त लोरी सुना के का होई ।।
पथर पर ई फूल चढ़ावे, असली विधाता ठुकराई ;
धरवा से सिर कटते बा जब, त हार बना के का होई।
द्रौपदी के चीर हरे नित, अहिल्या के तरूनाई ;
सीता के नित हरे रावणवा, त मेंहदी रचा के का होई ।।अँखिया०।।
आदमी के आदमी लूटे, बन पिशाच के परिछाईं ;
सरसो में बा भूत समाइल, त पचरा सुना के का होई।
सुसुकी-सुसुकी के रोये जवानी, छछनी-छछनी के लरिकाई ;
कँहरि-कँहरि के रोये बुढ़ापा, त अकेले ठठा के का होई ।।अँखिया०।।
मर रहल बा आदमिअत, हँसे आदमी खिलखिलाई ;
प्रेम के ना प्राण पखेरू, त इयारी लगा के का होई।
'अजीज'अजब के बनल मस्जिद, खोजे ओही में खोदाई ;
हियरा में ना राम बसे जब, त मंदिर बना के का होई ।।अँखिया०।।

8

बकरी के पोंछ ना बढ़ी करूआ तेल लगवला से।
छुछुनर के ना वास जाई, इतर का लगवला से ।।
भईंस ना संगीत बूझी, बीन का बजवला से।
कुकुर के ना पोंछ सुधरी, मालिस करवला से ।।

www.bhojpurisahityangan.com

मरद ना नारी होइहें, सारी का पहिनला से।
लरकी ना लरिका होई, बाल का छँटवला से।।
भँड़ुआ ना उस्ताद होइहें, वेश्या के नचवला से।
रांड़ ना एहवात होइहें, पीयरी के पहिनला से।।
चोर ना साधु होइहें, जट्टा का बढ़वला से ।
भिखारी ना जोगी होइहें, गेरुआ वस्त्र रंगवला से।।
हिन्दू ना पंडित होइहें, चन्दन का लगवला से।
मुस्लिम ना मुल्ला होइहें, दाढ़ी का बढ़वला से।।
मूरख ना नेता होइहें खद्दर का झमकवला से।
वेश्या ना सती होइहें, घूंघट का ओढ़वला से।।
बुढ़ऊ ना जवान होइहें, खिजाब का लगवला से।
जवनकु ना कुंमार होइहें मोंछ का मुड़वला से।।
भांट ना कवि होइहें, कवित्त का सुनवला से।
पंवरिया ना नर्त्तक होइहें, डांर का डोलवला से।।
झूठ ना साँच होई, बात का बनवला से।
रात ना दिन होई, चाँद का चमकला से।।
'अजीज' नाहीं भक्त होइहें, कीर्त्तन का गावला से।
पापी ना महात्मा होइहें, गंगा में नहइला से।।

9

अब ना करब बेगारी जमीन्दारिन के।।
भूखे ना पिआसे रहब, केहू से ना दुख कहब।
कुछ खाइब, कुछ देहब भिखारिन के।। अब ना०।।
ऊँच-नीच के भागी भूत, मिटि जाई छुआ-छूत।
ओरहना ना सुनब पनिहारिन के।। अब ना०।।
मरजी से करब काम, सहेब नाहीं रोब-दाब।
केहू इज्जत ना लूटी बनिहारिन के।। अब ना०।।
नित दिनऽ सुबह-शाम, हरे कृष्ण हरे राम।

www.bhojpurisahityangan.com

दुर्गाजी पूजब अब आसिन के ।। अब ना०।।
घरे जब अइहन साजन, खुशी खेली घर-आँगन।
फेंकरल ना सुनब सियारिन के ।। अब ना०।।
गुरूजी के होई मानऽ, अंगऊ दिआई धानऽ।
खोंइछा भराई अब हजामिन के ।। अब ना०।।
केहू नाहीं रही दुखी, लरिकन के देखि खुशी।
पुतरिया जुराई दूनों आँखिन के।। अब ना०।।
'मास्टर अजीज' दास घर बा कर्णपूरा खासऽ।
कीर्त्तन सुनावस गंवारिन के ।। अब ना०।।

10

बड़ा लोग बुरबक कमअकिला बुझाला ।।
बाबूजी का सोझा देखलीं बबुआ ना लजाला।
बोलेली मातारी देह लाठी से जँताला ।।
मेहरी का संगे देखलीं बीड़िए धूकाला।
बोले भउजाई चूल्हा-चक्की सब बँटाला ।।
उड़ी के फतिंगीं जइसे दीआ में पड़ी जाला।
जउआ के साथे जइसे घुनवा पिसाला ।।
कलजुग में राम नाम कहीं ना सुनाला।
फाड़ के रामायण देखलीं सेनूरे बिकाला ।।
'मास्टर अजीज' दास हाल ना कहाला।
जर जाला रसरी बाकिर अईंठन ना जाला ।।

11

रे कलजुगवा कमाल कइलक जारी ।।
माता-पिता पीछे पड़लन, मेहरी भइली आगारी।
बाप बोले त हुड़क दिखावे, माई के चटकन मारी ।।
जेठ बड़न से लाज ना लागे, अईंठत निकले दुआरी।

www.bhojpurisahityangan.com

सीख देवे जब चले पुरनिया, गारी से देवस तारी ।। हाय०।।
फिल्मी गीत गावत चलेला, पियत फिरेला तारी ।
केहू के कुछ ना बूझे ई, सबसे पड़ेलन भारी ।।
साथ-संगत बा चोर-चोटन के, साधु-संत गइले पिछुआरी ।
कहत 'अजीज' इनका के सहेजीहन, मदनमोहन मुरारी ।। हाय०।।

12

काफिर है सो कह लेते हैं, ऊँचा धर्म हमारा ।
ऊँचा-नीचा कुछ नहीं, सनातन सबका प्यारा ।।
ई सब बातन भूल गये, बाबा दास कबीर ।
घोर कलजुग भोग करत, उलटा बा तस्वीर ।।
साधु लपक रहल थैला पर, डाकू जपता माला ।
रामायण-पुराण में मन ना लागे, पीअतारें रम के प्याला ।।
जात-पाँत का नारा से, भारत खतम हो गइलन।
वेद-पुराण के मान घटल, जबसे पियक्कड़ भइलन ।।
ओम आ अल्लाह दुनिया में, प्यार के ह दू फूल ।
हम जे के राम कहलीं, ऊ कहेलन रसूल ।।
लंका में जब आग लागल, मक्का के पीर सो गइलन ।
राम के दूत जब लंका जरवलें, त मक्का में हल्ला काहे भइलन ।।
राम कहीं चाहे रहीम कहीं, दूनो एक डाली के फूल।
कइके करार उहाँ से अइलीं, रास्ते में गइलीं भूल ।।
मंदिर में राम, मस्जिद में रहीम, दाढ़ी-जनेऊ के झूठा नकेल बा ।
अलग-अलग एके समुझावे में, देखीं ना दूनो गोईंया फेल बा ।।
एही देश में हिन्दू बहिन, मुस्लिम के बनवलक भाई ।
वीर हुमायूँ नाम रहे उनकर, बहन रहली करूना बाई ।।
पढ़ीं गीता आ उलटीं कुरान, पढ़ीं हदीस आ देखीं पुरान ।
कहे 'अजीज' अन्तर नइखे, पढ़ला से होई समाधान ।।

www.bhojpurisahityangan.com

13

भोला गरीबन के दिन ।।
एकेगो त लोटा देलीं, बेटा देलीं तीन ।
खाये का बेरिया भोला, होला छिना-छिन ।।
खाये का ना रोटी बाटे, ना बाटे जमीन ।
बिन तरकारी तरसते रहीं, कहाँ से लाईं किन ।।भोला०।।
लंगटे-उघारे नन्हकी कलपे, मिले ना पपलिन ।
एकेगो त पहुँची रहल, सहुकारवा लेलक छीन ।।
दूनो बेकत बन्धुआ भइलीं, करजा रहे तीन ।
अब कवन चीज बेंच के, होईं हम उरिन ।।भोला०।।
घरनी के बा फाटल लुग्गा, खोजत फिरीं मरकीन ।
बिटिया बइठी बोले नाहीं, बनल रहे गमगीन ।।
रोअत-कानत रतिया बीते, दिनवा बीते गिन ।
'मास्टर अजीज' कहलो ना जाला, किस्मत पइलीं बीन ।।भोला०।।

•

www.bhojpurisahityangan.com

राष्ट्रीय गीत

1

पुरूब गोला, पछिम गोला,
दखिन में शिव भोला,
उत्तर गढ़देवी पूजा होला, ओ मढ़ौरा में।
जहाँ मेहताजी के घर,
उहाँ झगड़ा के जर,
इहे फइलल बा खबर, ओ मढ़ौरा में।
गाँधी बाबा के पुकार, 'भागऽ
छोड़ के देश हमार',
हमनी हो गइलीं तइयार, ओ मढ़ौरा में।
तारीख अठ्ठारह दिन शनिचर,
खेत में भरल रहे कीचड़,
पहुँचल फिरंगी निशिचर, ओ मढ़ौरा में।
भइल मिंटिंग के तइयारी,
भीड़ जुटल बड़ा भारी,
बहुरिया रही सबसे आगारी, ओ मढ़ौरा में।
गोरा कर देलक चढ़ाई,
केहू का कुछ ना बूझाई,
कइसे होई अब लड़ाई, ओ मढ़ौरा में।
बन्दूक छूटल धड़ाधड़,
चिरई उड़ल फड़ाफड़,
गोली बरसल झराझर, ओ मढ़ौरा में।

www.bhojpurisahityangan.com

मचल भारी हाहाकार,
लोग भागल बेशुमार,
केहू करत भागे में चित्कार, ओ मढ़ौरा में।
आइल दखिन से ललकार,
मारऽ गोरन के पहार,
गूँजल गाँधी के जयकार, आ मढ़ौरा में।
गोली चले धड़ाधड़,
रोड़ा बरसे तड़ातड़,
केहू मारे फेंक पथर, ओ मढ़ौरा में।
ओने अँगरेजन के गोली,
एने किसानन के टोली,
गूँजे 'जय हिन्द' के बोली, ओ मढ़ौरा में।
भागे लगलनहँ जब गोरा,
हमनी फेंक के मरलीं रोड़ा,
भीड़ घेरलक तब चौकोरा, ओ मढ़ौरा में।
पीछा कइलक जब किसान,
गोरा खेत में गिरलन चितान,
कइसे बचिहन अब परान, ओ मढ़ौरा में।
लेके बरछी-भाला-तलवार,
भइल गोरन पर प्रहार,
बहे लागल लहू के धार, ओ मढ़ौरा में।
छगो मारल गइलन गोरा,
केहू धान केहू मकई का ओरा,
एगो भागल पछिम जस घोड़ा, ओ मढ़ौरा में।
एगो घर में गइलन समाई,
जनाना करत रही कुटाई,
भइल उनकर गोधन के कुटाई, ओ मढ़ौरा में।

www.bhojpurisahityangan.com

रामजीवन रहलन जवान,
दिहलन देशवा खातिर जान,
जेकर लेरुआ रहे मकान, ओ मढ़ौरा में।
'मास्टर अजीज' कहे पुकार,
गूँजल भारत के जयकार,
भोला होइहें मददगार, ओ मढ़ौरा में।

2

छपल खद्दर के चुनरिया लहरदार बा, पहिनऽ दिल तोहार बा ना।
छपल बा मौलाना आजाद,
कइलन दुश्मन बरबाद।
जेमें मोतीलाल के बेटा होशियार बा,
पहिनऽ दिल तोहार बा ना।
बीच में छपल बाटे गाँधी, मिटे ना कतनो आवे आँधी।
सुभाष किनरिया पर देख चटकदार बा,
पहिनऽ दिल तोहार बा ना।
अँचरा पर छपल लक्ष्मीबाई, गोटा लागल राजेन्द्र भाई।
जेने देखीं ओने जयहिन्द पुकार बा,
पहिनऽ दिल तोहार बा ना।
सारी ले जा तूँ बेगम,
छपल बा वन्देमातरम्।
नीचे छपल भगतसिंह सरदार बा, पहिनऽ दिल तोहार बा ना।
कहत 'मास्टर अजीज दास',
चुनरिया बनल बाटे खास।
पहनी उहे जे देश के पहरादार बा, पहिनऽ दिल तोहार बा ना।

www.bhojpurisahityangan.com

3

जवाहर हउअन देश के रतनवा, बखानवा सारा लोग करेला ।।
राजेन्द्र बाबू के संघतिया बनवलन, जीरादेई जेकर ह मकानवा ।
गाँधी बाबा के चेला कहालन, मोती के हउअन ललनवा ।।
कोठी-अमारी इनका मनहूँ ना भावे, देश खातिर जालन जेलखानावा ।
आपन कोठी तेआगी दउरल फिरस, देशवा में बसेला परानवा ।।
लड़त-लड़त ई हार ना मानस, कइलन आजाद हिन्दुस्तानवा ।
गोरन के गोली काम ना आवे जब, लड़ा देलन हिन्दू-मुसलमानवा ।।
करम फूटल कि देशवा जे टूटल, जिन्ना के बनल पाकिस्तानवा ।
अम्बेदकर के गेयान ना पूछीं, भारत के लिखलन संविधानवा ।।
नेहरू के धेआन-गेआनऽ में रखिहऽ, लड़िहऽ ना हिन्दू-मुसलमानवा ।
कहत 'अजीज'केहू कुछ ना बिगड़ीहन, जहाँ नेहरू जस होइहें मरदानावा ।।

4

बेसिक खुलल बा पाठशाला,
बुढ़ऊ खातिर बूढ़शाला,
इहे भइल बाटे हाला, निरंकार भगवन्ता ।।
सुननी जनता के दुख जाई,
राशन सस्ता बिकाई,
बिजली नहर भी खोदाई, निरंकार भगवन्ता ।।
खुली भारी कारखाना,
काम करिहें औरत-मरदाना,
बेकार रहिहन ना सेयाना, निरंकार भगवन्ता ।।
काँग्रेस कानून कइलक जारी,
अब ना लागी मालगुजारी,
खतम हो जाई चौकीदारी, निरंकार भगवन्ता ।।

www.bhojpurisahityangan.com

कतहीं रहो ना जमीन्दारी,
मिटिहें अमला-पटवारी,
दुखवा देलन करमचारी, निरंकार भगवन्ता ।।
बनी पंचाइती सरकार,
होई चिकन सड़क तइयार,
दउरी लारी-बस-मोटरकार, निरंकार भगवन्ता ।।
'मास्टर अजीज' कहे गाई,
खरचा लागी ना एको पाई,
खुशिया घर-घर में बँटाई, निरंकार भगवन्ता ।।

5

कौन मरलस हमरा गाँधी के गोली रे, दमादम बम के गोला ।
पूजा करे जात रहलन बिरला भवनवाँ,
मुँहवाँ से निकले हरे राम के बोली रे । दमादम बम के गोला ।
एक गोली मरलस, दूसर गोली मरलस,
तिसर गोली मारे हाला होली रे । दमादम बम के गोला ।
पापी अधरमी का लाजो ना लागे,
खेले अनेरे लहू के होली रे । दमादम बम के गोला ।
धरम-अधरम के भेद ना जाने,
बोलेला हरदम धरम के बोली रे । दमादम बम के गोला ।
साँचे कहव चाहे नाहीं पतिअइब,
देश दखलिआवे चाहे हिटलर के टोली रे । दमादम बम के गोला ।
पाप के दाग कभी छूटहूँ ना पावे,
रंगलऽ तू कतनो दामन के चोली रे । दमादम बम के गोला ।
'मास्टर अजीज' छूटल भारत नगरिया,
उठ गइले गाँधी बाबा के डोली रे । दमादम बम के गोला ।

•

www.bhojpurisahityangan.com

बारहमासा

फागुन फ़ाग बुलाई दिहले, अंग-अंग फुलाई दिहले हे।
मइया ओढ़ के वासंती चुनरिया, नगरिया हरसाई गइले हे॥
चइत चनरमा चिढ़ाई गइले, पिय बिन तरसाई गइले हे।
मइया बासी जे भात अरूआई गइले, लरिका छछनाई गइले हे॥
बइरी बइसाख बिखियाई गइले, जेठ अगियाई गइले हे।
खेतवा के तातल भुंभुरिया, त अगिया लगाई गइले हे॥
आषाढ़ अजब अगराई गइले, बादल बउराई गइले हे।
मइया दादुर-झिंगुर झनझनाई गइले, उमस बढ़ाई गइले हे॥
सावन-भादो के अन्हरिया, ना लउके अँगुरिया नु हे।
मइया भुखवा के बरेला बतिया, त जरेला छतिया नु हे॥
आसिन आस जगाई गइले, कंत बिसराई गइले हे।
मइया गाँवें-गाँवें दुरगा पूजायेली, असरा पुरावेली हे॥
कातिक कंत जे बिदेश में, गंगा हम नहाईं कइसे हे।
मइया सोहर सखिया सुनावेली, पिया के लुभावेली हे॥
अगहन-पूस के महीनवाँ, ना छूटेला पसीनवाँ नु हे।
मइया घरे-घरे उठल सगुनवाँ, त आवेलन पहुनवाँ नु हे॥
माघ महीना जे आई गइले, देह ठिठुराई गइले हे।
मइया लुगरिया के गांथत गुदरिया, उमरिया ओराई गइले हे॥
'मास्टर अजीज' इहो गावेलन, गाई के सुनावेलन हे।
मइया जुगे-जुगे बढ़ो एहवात, होखे खुशी-बरसात नु हे॥

●

www.bhojpurisahityangan.com

फुटकर

1

धन्य-धन्य जिला छपरा के ई धाम, राम राम हरे हरे।
ऋषि लोग के धरत बानी नाम, राम राम हरे हरे॥
सोनपुर में हरिहर नाथ त्रिवेणी बहे धार, राम राम हरे हरे।
गज के बचवलीं आ के रउआ प्राण, राम राम हरे हरे॥
आमी में भवानी राजा दक्ष के मकान, राम राम हरे हरे।
लिखल बाटे ग्रंथ शिवपुरान, राम राम हरे हरे॥
चिरान में मोरध्वज के भइल इम्तिहान, राम राम हरे हरे।
जवन बेटा के कइलन बलिदान, राम राम हरे हरे॥
इनई में इन्दरजी के कायम बाटे धाम, राम राम हरे हरे।
जे गौतम ऋषि के कइलन परेशान, राम राम हरे हरे॥
दरौली में द्रोणाचार्य के कायम बाटे धाम, राम राम हरे हरे।
जे महाभारत के चक्रब्यूह के कइलन काम, राम राम हरे हरे॥
कुमना में कुंभज ऋषि के कायम बाटे धाम, राम राम हरे हरे।
जवन गंगाजी के कइलन जलपान, राम राम हरे हरे॥
सिमरिया में शृंगी ऋषि के कायम बाटे धाम, राम राम हरे हरे।
जे दशरथ के देलन पुत्र-वरदान, राम राम हरे हरे॥
गोदना में गौतम ऋषि के कायम बाटे धाम, राम राम हरे हरे।
अंजनी के पुत्र हनुमान, राम राम हरे हरे॥
शिल्हौड़ी में शीलनिधि के कायम बाटे धाम, राम राम हरे हरे।
जहाँ नारद के भइल इम्तिहान, राम राम हरे हरे॥

www.bhojpurisahityangan.com

दहियावाँ में दधीचि ऋषि जपत रहलन नाम, राम राम हरे हरे।
जे हड्डी के कइलन ह दान, राम राम हरे हरे।।
छपरा ह ऋषि लोग के पुण्य अस्थान, राम राम हरे हरे।
कइलन 'मास्टर अजीज' परनाम, राम राम हरे हरे।।

2

सुनीला जे भक्त बड़ा बलवान,
ई का कइलऽ हे भगवान।
भक्त प्रहलाद के जान बचइलऽ, 'रा-रा' पुकारे नाम।
हरनाकुस के ओदर बिगाड़े, धन्य-धन्य कृपानिधान।। ई का०।।
'स्वामी से सेवक ह बड़ा' लिखल वेद-पुरान।
रामचन्द्रजी सेतु बाँधे, फांद गइलन हनुमान।। ई का०।।
जे-जे नाम जपे हरिहर के, ताके बन गइल सब काम।
कवन कसूर गाँधी से भइले, कि नथुआ मरलक जान।। ई का०।।
'मास्टर अजीज' के अरजी इहे बा, धन्य हईं कृपानिधान।
जिला छपरा थाना मढ़ौरा, खास कर्णपुरा मकान।। ई का०।।

3

रोबऽ आपन लिहअस जम्हाई जी, हाय हाय रे कलजुगवा।
जब से कलजुग आइल, घोर अत्याचार छाइल;
ब्राह्मण लोग का वेद ना बूझाई जी, हाय हाय रे कलजुगवा।
मिथिला ब्राह्मण खास, वेदवा के छोड़लन आस;
घरे-घरे भातवा बनाई जी, हाय हाय रे कलजुगवा।
पंडित ना जाने पुरान, मुल्ला ना पढ़े कुरान;
भजन में फिल्मी धुन गवाई जी, हाय हाय रे कलजुगवा।
जोगी ना जोग जाने, दुनिया के भोग माने;
घूमत फिरे जटवा बढाई जी, हाय हाय रे कलजुगवा।
ना संत सन्यासी बा, भोग के ई पिआसी बा,
ठगे खातिर गेरुआ रंगाई जी, हाय हाय रे कलजुगवा।

www.bhojpurisahityangan.com

भजन भुलाइ गइले, कीर्त्तन कोहनाइ गइले;
रामऽ के ना जाने चौपाई जी, हाय हाय रे कलजुगवा।
'मास्टर अजीज' गाई, भजन करऽ रघुराई;
कलजुग के लागी ना कलाई जी, हाय हाय रे कलजुगवा।

4

सावन महीना ह अंगूठी नगीना,
उड़-उड़ बदरिया झमरे लागे।
रिमझिम बरसेला बरखा फुहार के,
हुलसेली धरती आपन अँगिया निहार के।
हरिअरी फइलल बा खेत-खरिहनिया,
सब गाँव नगरिया सुघर लागे ।।सावन०।।
रही-रही चमकेली चंचल बिजुरिया,
हियरा जुरावेली बरसत बदरिया !
गोरिया का लिलरा पर चमके टिकुलिया,
ई विधना के कवनो हुनर लागे ।।सावन०।।
ताल-तलैया कै गरहा-गुरुहिया के,
झिलमिल पनिया में छोटकी मड़इया के।
ओही रे मड़इया में गोरी के जवनिया,
जइसे नदिया भरल लागे ।।सावन०।।
उमड़-घुमड़ जब गरजे बदरवा,
चमके बिजुरिया त टिके ना नजरवा।
बदरा का घुंघट से झांके अँजोरिया,
नइकी क नियावा सुरन लागे ।।सावन०।।
'पिऊ-पिऊ' पपीहरा बनवा में बोले,
नाची-नाची मोरवा भेद काहे खोले।
रसे-रसे बहे जब पूरवा बेअरिया,
झींगुर के झनझन झूमर लागे ।।सावन०।।

www.bhojpurisahityangan.com

बैलन के घंटी ई सरगम सुनावे,
हरवाहा भींगी चौमासा गावे ।
निहुरी-निहुरी गोरी करे रोपनिया,
धरती के गगन चुमन लागे ।।सावन०।।
'बोलऽ बम, बोलऽ बम' पुकारे कांवरिया,
खुली जाला बाबा के बंद केवरिया ।
नदिया का आरी-पारी हरिअर धरतिया,
जइसे जन्नत के हूर सुन्नर लागे।।सावन०।।
कजरी के बोल हिया आगी लगावे,
सखिया के सोहर आपन कंत बुलावे ।
'मास्टर अजीज' कब अइहें संवरिया,
दादुर के बोली जहर लागे ।।सावन०।।

5

सावन हे सखी बड़ा सुहावन,
हियरा में उठेला हिलोर हे ।।
रिमझिम-रिमझिम बरसे बादल,
भींजेला हमरा पोरे-पोर हे ।
झींगुर झांझर झनझन बजावे,
वनवा में नाचेला मोर हे ।।सावन०।।
कारी अन्हरिया में घेरे बदरिया,
रात भेयावन बड़ा जोर हे
सुतीं सेजरिया पर देखीं सपनवां,
बेअरिया जगावे बरजोर हे ।।सावन०।।
मोर साजनवा हे अइहन भवनवा,
बिजुरिया दिखावेली अँजोर हे ।
माथे पर टोपी भींजे, कुर्त्ता-अंगोछी भींजे,

www.bhojpurisahityangan.com

भींजेला धोतिया के कोर हे ।।सावन०।।
आजू के रात जनि बरसऽ बदरिया,
इहे बा तोह से निहोर हे ।
नदिया फुलाइल बाटे, धरती अगराइल बाटे
चाँद खातिर तड़पे चकोर हे ।।सावन०।।
अँगना में पानी-पानी, दुअरा पर पानी-पानी,
भींजे ना आसरा के डोर हे ।
'मास्टर अजीज' गाई सुनऽ सभे हरसाई,
दर्शन दीहऽ चितचोर हे ।।सावन०।।

6

पिया पहिले-पहिले जालऽ परदेश,
आपन देहिया सम्हार रखिहऽ ।।
सुनीला कि होली उहाँ गोर-गोर डइनिया,
चउक-चउराहा छेंकस वेश्या नगिनिया ।
पिया चौकस रएिहऽ हरमेश ।
आपन देहिया सम्हार रखिहऽ ।।
जहाँ-तहाँ होला उहाँ भारी चोरबाजारी,
ट्राम-बस-गाड़ी में होला पाकिटमारी ।
राह चलिहऽ कि लागे नाहीं ठेस ।
आपन देहिया सम्हार रखिह ।।
भारी भीड़ होला उहाँ हाट-बजरिया,
गुंडा-पियक्कड़ पर रखिहऽ नजरिया ।
ठग घुमेलन ध के पुलिस के भेस ।
आपन देहिया सम्हार रखिहऽ ।।
लोग बउराइल फिरे पी के ताड़ी-दारु,
मरदन के अँगुरी धरी घूमे मेहरारु।

www.bhojpurisahityangan.com

लाज-शरम के नाहीं लवलेस ।
आपन देहिया सम्हार रखिहऽ ।।
सुनीला कि केहू के ना केहू पतिआला,
घर के पड़ोसी ना पड़ोसी से बतिआला ।
सईंया सहिहऽ ना कवनो कलेश ।
आपन देहिया सम्हार रखिहऽ ।।
रुखा-सूखा खइहऽ आ करिहऽ मजूरी,
लंपट पियक्कड़ से रखिहऽ तूं दूरी ।
कवनो तिरिया के छुइहऽ ना केस ।
आपन देहिया सम्हार रखिहऽ ।।
अइहऽ त बबुनी के लइहऽ नथुनियां,
ओढ़नी गुलाबी आ लहंगा जमुनिया ।
खुश रखिहन तोहें गौरी-गणेश ।
आपन देहिया सम्हार रखिहऽ ।।
आँगन-दुआर के ना करिहऽ फिकिरिया,
इज्जत जोगाइब तोहर सारी उमिरिया ।
जाते-जाते तूं भेजिहऽ सन्देश ।
आपन देहिया सम्हार रखिहऽ ।।
'मास्टर अजीज' जनि तूड़िहऽ पिरितिया,
हँसत-खेलत रहे तोहरो जिनिगिया ।
पूजब तेरस के उमा–महेश।
आपन देहिया सम्हार रखिहऽ ।।

7

कर्म-प्रधान विश्व करि राखा,
अबहीं समझ में आइल कि ना ?
बाल्मीकि लकड़हारा कुल के,
महर्षि के नाम कमाइल कि ना ?

www.bhojpurisahityangan.com

जपत उलटा नाम राम वेद,
संस्कृत में 'रामायण' लिखाइल कि ना ?
कर्म-प्रधान विश्व करि राखा,
अबहीं समझ में आइल कि ना ?
मल्लाहिन कोख से वेद व्यास जी,
ज्ञान के पंडित कहलाइल कि ना ?
ऊँचा पद व्यास पर जा के,
महाभारत कथा लिखाइल कि ना ?
कर्म-प्रधान विश्व करि राखा,
अबहीं समझ में आइल कि ना ?
ऊँचा कुल के पंडित ब्राह्मण,
भोजन पवित्र परोसाइल कि ना !
सुपच कवन कुल के उतम,
जेकरा खइले घंटा घहराइल कि ना ?
कर्म-प्रधान विश्व करि राखा,
अबहीं समझ में आइल कि ना ?
भील कुल के गरीब शेक्री,
भक्ति से राम लोभाइल कि ना ?
बुलाई कुटिया राम-लखन के,
जूठ बइर भोग लगवाइल कि ना ?
कर्म-प्रधान विश्व करि राखा,
अबहीं समझ में आइल कि ना ?
कसाई कुल में सदन जनमले
जेके मुक्ति दियाइल कि ना ?
नीच कुल के भइली गनिका,
उहो दुनिया से तराइल कि ना ?
कर्म-प्रधान विश्व करि राखा,
अबहीं समझ में आइल कि ना ?

www.bhojpurisahityangan.com

जुलाहा कुल के दास कबीरजी,
भक्ति के निर्गुन धार बहाइल कि ना ?
कर्म-प्रधान विश्व करि राखा,
अबही समझ में आइल कि ना ?
शूद्र कुल के भक्त रविदास,
निरगुन भक्ति गवाइल कि ना ?
भक्ति करत-करत ब्रह्म के,
शुद्ध संत पद पाइल कि ना ?
कर्म-प्रधान विश्व करि राखा,
अबहीं समझ में आइल कि ना ?
गिद्ध योनि के पक्षी जटायु,
राम से कर्मफल पाइल कि ना ?
लड़त-लड़त रावन से मरल,
ऊ राम से चिता सजवाइल कि ना ?
कर्म-प्रधान विश्व करि राखा,
अबहीं समझ में आइल कि ना ?
बनिया कुल के गाँधी बाबा,
दुनिया में नाम कमाइल कि ना ?
मोची कुल के लड़ाकू स्टालिन,
हिटलर के हठ मिटाइल कि ना ?
कर्म-प्रधान विश्व करि राखा,
अबहीं समझ में आइल कि ना ?
महार जाति के बाबा अम्बेदकर,
उत्तम शिक्षा कमाइल कि ना ?
ज्ञान-बुद्धि के चमत्कार से,
भारत के विधान लिखाइल कि ना?
कर्म-प्रधान विश्व करि राखा,
अबहीं समझ में आइल कि ना ?

www.bhojpurisahityangan.com

चमार कुल के जगजीवन जी,
सबसे 'बाबू' कहवाइल कि ना?
कर्म करत दिल्ली में बइठी,
देश के शासन चलाइल कि ना ?
कर्म-प्रधान विश्व करि राखा,
अबहीं समझ में आइल कि ना ?
पासी कुल के जगलाल चौधरी,
उहो मिनिस्टर पद पाइल कि ना ?
जेकर बेटा वीर इन्द्रदेव,
शहीदन में नाम लिखवाइल कि ना ?
कर्म-प्रधान विश्व करि राखा,
अबहीं समझ में आइल कि ना ?
नाई कुल के ठाकुर भिखारी,
'राय बहादूर' कहलाइल कि ना ?
लिख-लिख के भोजपुरी में,
कलाकार आ कवि कहाइल कि ना ?
कर्म-प्रधान विश्व करि राखा,
अबहीं समझ में आइल कि ना ?
'मास्टर अजीज' के जात ना पूछीं,
भक्ति गीत लिखाइल कि ना ?
धर्म-जाति के भेद मिटा के,
हरि कीर्त्तन गवाइल कि ना ?
कर्म-प्रधान विश्व करि राखा,
अबहीं समझ में आइल कि ना ?

●

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी के समन्वयवादी लोकचेतना के
भक्त-कवि मास्टर अजीज पर
शोधपूर्ण ग्रंथ
'मास्टर अजीज : व्यक्तित्व आ कृतित्व'
प्रकाशित होखे का क्रम में बा
आपन प्रति अग्रिम सुरक्षित कराईं

प्रकाशक
विश्व भोजपुरी सम्मेलन
नई दिल्ली

प्राप्ति-स्थान :

1. श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह
   1, शेफाली अपार्टमेंट
   डॉ. ए. के. सेन पथ,
   नाला रोड, पटना-800 004
2. एम. जब्बार आलम
   जामुनगली, नई मस्जिद
   सब्जीबाग, पटना-800 004